

पाठ 13 – अध्याय 15 और 16

निर्गमन के अध्ययन के हमारे परिचय में, हमने इसे 6 भागों में विभाजित किया, बस हमें एक तरह की संरचना देने के लिए ताकि हम मिस्र से इस्राएल के छुटकारे, एक राष्ट्र के रूप में गठन और माउंट सिनाई पर तोरह प्राप्त करने के विभिन्न चरणों से गुज़र सकें। अध्याय 15 की पद 21 पहले भाग को समाप्त करती है, जिसे मैंने उद्धार कथा कहा था, और अगले भाग की शुरुआत करती है, जिसे जंगल में कहा जाता है तो, आइए पद 1-21 को पढ़कर शुरू करें।

अध्याय 15:1-21 पढ़ें

अध्याय 15 के पहले 21 पद वास्तव में एक गीत हैं, जिन्हें अक्सर मूसा का गीत कहा जाता है, कभी-कभी समुद्र पर गीत भी कहा जाता है। इब्रानी में इसे **शिरत हा-यम** कहा जाता है और धार्मिक उद्देश्यों के लिए इसे बस **शिरा** के रूप में जाना जाता है और, जब मैं गीत कहता हूँ, तो मेरा मतलब ठीक वैसा ही **गीत** होता है जैसा हम सोचते हैं: संगीत के साथ कविता। इब्रानी में, मूसा के गीत के शब्द तुकबंदी करते हैं, और वाक्यांशों को दोहरे और तिहरे अक्षरों में लिखा जाता है, जो प्राचीन इब्रानी, गीत और कविता संरचना की विशेषता है। बिखरना, चूर होना, काँपना, भयभीत होना, भस्म होना, भय और पीड़ा जैसे शक्तिशाली और अभिव्यंजक शब्दों का उपयोग किया जाता है। कविता में निहित अत्यधिक आवेशित भावनाओं और विशेष रूप से उस युग के सैन्य विजय गीतों के लिए विशिष्ट। जब लोग ये शब्द गा रहे होते थे, तो संगीत के बाजा बज रहे होते थे।

आइए हम इस बात को ध्यान में रखें कि यहाँ जो कुछ है वह मनुष्य द्वारा रचित एक गीत है। अर्थात्, इस गीत में निहित अतिशयोक्ति और गर्वपूर्ण अभिव्यक्तियों और हजारों मिस्री सैनिकों की मृत्यु पर अत्यधिक खुशी आवश्यक रूप से परमेश्वर के विचार नहीं हैं: बल्कि समुद्र के किनारे इस महान विजय के प्रति मनुष्य की सहज प्रतिक्रिया है। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि बाइबिल में विभिन्न प्रकार के साहित्य मौजूद हैं, और क्योंकि हमें सावधान रहना चाहिए कि जब हम परमेश्वर के मन के बारे में लिखी गई किसी बात को मनुष्य के मन के बारे में न मानें। कुछ समय पहले मैंने उल्लेख किया था कि हमें पवित्रशास्त्र में ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे, जहाँ मनुष्य सच नहीं बोलता, यहाँ तक कि परमेश्वर को कुछ ऐसा बता देता है जो सच नहीं है। हम देखते हैं कि दाऊद ने एक से अधिक अवसरों पर ऐसा किया। हम देखते हैं कि पतरस यीशु को जानने के बारे में झूठ बोलता है, और ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्हें उद्धृत नहीं किया जा सकता। मुद्दा यह है कि, हम जो अक्सर पढ़ते हैं वह केवल एक सटीक विवरण है कि क्या हुआ और क्या कहा गया, चाहे वह किसी विशेष व्यक्ति की चापलूसी कर रहा हो या नहीं, या इस्राएलियों की चापलूसी कर रहा हो या नहीं, यहाँ तक कि चाहे वह परमेश्वर को प्रसन्न करे या नहीं।

बाइबिल हमें उसके पात्रों की सारी बुराइयों दिखाती है।

इस गीत में व्यक्त मुख्य विषय परमेश्वर, यहोवा की मिस्रियों पर विजय पर इस्राएल के अत्यधिक गर्व की बात है; फिरौन से बच निकलने पर उनकी खुशी, और यहाँ तक कि इस जीत की खबर से कनानियों और

पलिशितयों को कितना आश्चर्य और चिंता हुई होगी, इस पर कुछ समय से पहले की खुशी भी इसमें शामिल है। लेकिन, गीत के अंतिम भाग में एक और महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किया गया है; यह है कि परमेश्वर ने एक राष्ट्र, एक धर्मतंत्र बनाया है; कि यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसका राजा परमेश्वर है। यह इस्राएल राष्ट्र का संस्थापक गीत है।

इसलिए, जबकि मूसा का गीत मिस्र से उनके उद्धार के संबंध में अभी-अभी घटित हुई सभी घटनाओं का वर्णन करने का मनुष्य का प्रयास है, यह उतना महत्व नहीं रख सकता जितना कि हम निर्गमन के पिछले अध्यायों में पढ़ते हैं, क्योंकि तथ्यों के साथ-साथ प्राचीन सांस्कृतिक परंपराएँ भी हैं कि सैन्य विजय के बाद विजय गीत कैसे रचा जाता है, जो कि काफी हद तक वह संदर्भ है जिसके द्वारा इब्रानियों ने अभी-अभी घटित हुई घटनाओं को देखा था। हमें इस पर चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है हमारा सारा ईसाई संगीत इसी तरह से रखा गया है। हम गीत और संगीत के माध्यम से, स्वर्गीय चीजों के बारे में अपनी समझ और यह कि हम क्या सोचते हैं कि हम परमेश्वर को करते हुए देखते हैं, और हम कैसे सोचते हैं कि परमेश्वर की प्रशंसा और सम्मान किया जाना चाहिए, अपनी संस्कृति में परिचित सिद्ध और सच्ची पारंपरिक संगीत संरचनाओं और प्रस्तुति के तरीकों का उपयोग करके, सर्वोत्तम तरीके से व्यक्त करते हैं। मूसा के गीत के साथ यहाँ यही सब हो रहा है; केवल, निश्चित रूप से, यह प्राचीन इस्राएली संस्कृति की सेटिंग में है।

अब, इस गीत के प्रत्येक पद को पढ़े बिना (चूंकि यहाँ कोई नई जानकारी नहीं है), मैं कुछ रोचक बातें बताना चाहूँगा, जो इतिहास के इस मोड़ पर इब्रानी लोगों की मानसिकता को समझने में हमारी मदद करने के लिए उपयोगी होंगी।

पद 11 पर ध्यान दें, इसमें एक अलंकारिक प्रश्न पूछा गया है: "हे एदोनाई, पराक्रमियों में तेरे समान कौन है?" यदि आपके पास अन्य संस्करण हैं, तो आपकी बाइबिल में प्रभु के बजाय एदोनाई लिखा हो सकता है, या 'शक्तिशाली' के बजाय देवता। तो आप में से कुछ के मन में यह सवाल हो सकता है, "हे प्रभु, देवताओं में तेरे समान कौन है?" और, यह बहुत सटीक है। मूल इब्रानी में कुछ शब्दों को प्रतिस्थापित करने पर यह शाब्दिक रूप से कहता है "हे **यहोवा, एलीम** के बीच तेरे समान कौन है।" एलीम का अर्थ है देवताओं में सर्वोच्च या सबसे शक्तिशाली परमेश्वर, बहुवचन। आप देखें, उस समय मनुष्य जिस सामान्य तरीके से आध्यात्मिक दुनिया को देखते थे (और इस्राएल अलग नहीं था) वह यह था कि न केवल यह कई देवताओं से बना था, बल्कि ये देवता एक दिव्य शक्ति संरचना में भी थे। इसलिए, उनके दिमाग में, निम्न देवता थे जो शक्तिशाली देवताओं की सेवा करते थे, और बीच में सभी प्रकार के अन्य देवता भी थे। इब्रानी शब्द एलीम उन देवताओं को इंगित करता है जो सत्ता संरचना के शीर्ष पर हैं, अधिक शक्तिशाली देवता।

शायद यह सुनकर परेशानी हो कि मिस्र से बचाए जाने के बाद भी इस्राएल ने यहोवा को कई देवताओं में से एक माना, लेकिन इसे इस तरह से सोचें: जैसे कि नवजात ईसाई सीखते हैं कि यीशु प्रभु हैं, लेकिन इसके अलावा और कुछ नहीं जानते, वैसा ही इस्राएल और यहोवा के बारे में उनकी समझ के साथ भी हुआ। नए ईसाई बहुत सी पूर्वधारणाओं के साथ शुरू करते हैं जिन्हें वे सच मान लेते हैं, यह महसूस नहीं करते कि वे जो सोचते

हैं कि वे परमेश्वर के बारे में जानते हैं, उनमें से अधिकांश झूठ है। और, इसलिए, एक ओर जहाँ इस्राएल यहोवा को इस्राएल के एकमात्र परमेश्वर के रूप में देखता था, वहीं दूसरी ओर वे उसे एकमात्र परमेश्वर के रूप में नहीं देखते थे, जो अस्तित्व में था, बल्कि कई देवताओं में सर्वोच्च देवता के रूप में देखते थे, मुख्य देवता, इस मामले में मिस्र के देवताओं से भी अधिक शक्तिशाली।

डॉ. रॉबर्ट मैकगी इसे इस तरह से कहते हैं: जब हम पहली बार परमेश्वर के पास आते हैं, तो हम उन छल-कपटों से भरे होते हैं जो हमारे पूरे जीवन में भरे रहे हैं। यीशु को केवल परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने से हम इन छल-कपटों से मुक्त नहीं हो जाते, वास्तव में, यीशु हमें बताते हैं कि यह "सत्य है जो आपको मुक्त करेगा। जैसे ही हम खुद को परमेश्वर के लिए खोलते हैं, वह हमें सत्य प्रकट करता है। एक सत्य, एक कदम, एक बार में और, इनमें से प्रत्येक सत्य हमें उन कुछ छल-कपटों को नष्ट करने के लिए दिया गया है जिन पर हमने पहले विश्वास किया था। लेकिन, यह एक धीमी, आजीवन प्रक्रिया है।

यह इस्राएल की स्थिति थी। वे मिस्र से चले गए, उनके मन और आत्मा पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुके थे और 400 साल के प्रवास के दौरान वहाँ अर्जित झूठी धारणाओं से भरे हुए थे। आध्यात्मिक परिपक्वता के मामले में अपने निर्गमन के समय वे शिशु ईसाइयों के बराबर थे। शिशु इस्राएल अब जानता था कि उनके पास एक परमेश्वर है, और वे उसका नाम जानते थे और वे जानते थे कि वह मिस्र के देवताओं से अधिक शक्तिशाली था। लेकिन, वे इससे ज़्यादा कुछ नहीं जानते थे और जो कुछ वे सोचते थे कि वे जानते हैं, वह या तो इतना सरल था कि लगभग अर्थहीन था, या पूरी तरह से झूठ था।

इसलिए, जैसा कि हम सभी करते हैं जब वे पहली बार प्रभु के पास आते हैं, उन्होंने यहोवा को अपनी शिक्षा, संस्कृति और जीवन के अनुभवों के संदर्भ में देखा। उनके लिए, यहोवा उनका परमेश्वर था। लेकिन अन्य लोगों और अन्य राष्ट्रों के भी अपने देवता थे। इस तरह की सोच उन्हें, उनके पूरे इतिहास में मूर्ति पूजा में ले जाती थी, जिसके परिणामस्वरूप अंततः कई अवसरों पर उन पर परमेश्वर का व्याप आया।

पद 14 और 15 में पलिश्ती, एदोम, मोआब और करान का जिक्र है। इसमें कहा गया है कि ये राष्ट्र काँप उठे और हार गए जब उन्होंने सुना कि इस्राएल के परमेश्वर के कारण मिस्र के साथ क्या हुआ था। क्या यह इब्रानियों की इच्छाधारी सोच थी? शायद शेखी बघारना और हींग मारना? जैसा कि हमने कुछ हफ्ते पहले चर्चा की थी, हालाँकि तब खबरें आज की तरह तुरंत नहीं आती थीं, लेकिन लोगों को इस बात में बहुत दिलचस्पी थी कि दूसरे राष्ट्रों के लोग क्या कर रहे थे। इस्राएल के मिस्र छोड़ने के कुछ ही दिनों के भीतर 30 लाख लोगों का निर्गमन बड़ी खबर होती और यह जानकारी पूरे क्षेत्र में बहुत जल्दी फैल जाती।

लेकिन, फिलिस्तीया, एदोम मोआब और कनान विशेष रूप से चिंतित क्यों होंगे? क्योंकि उस समय तक यह आम बात हो चुकी थी कि अब्राहम इसहाक और याकूब के वंशजों का मानना था, सही या गलत, कि उन 4 राष्ट्रों के रहने का क्षेत्र एक दिन इस्राएल का होगा। और, ये राष्ट्र जानते थे कि अगर 3 मिलियन दृढ़ निश्चयी लोग सामने आए इस परमेश्वर, यहोवा के साथ, जिसने मिस्र को तबाह कर दिया और मिस्र के देवताओं का मजाक उड़ाया और अगर इस्राएल का उद्देश्य उनसे उन जमीनों को छीनना था, तो वे ऐसा कर सकते थे। उस

क्षेत्र पर राज करने वाले कई आदिवासी सरदारों और राजाओं के लिए इसका मतलब था अपनी निजी संपत्ति और शक्ति खोना। आम लोगों के लिए, इसका मतलब था इस्राएल के हाथों अधीनता या निष्कासन। इसलिए, यह काफी संभावना है कि उन 4 राष्ट्रों ने इस बारे में बहुत सार्वजनिक चिंता दिखाई कि विशाल इस्राएली भीड़ कहाँ जा रही थी, और इन इब्रानियों (जो इतने लंबे समय से गुलाम थे) ने वास्तव में इसका आनंद लिया कि अब उनसे डरने लगे।

एक अंतिम विचार और हम आगे बढ़ेंगे। दिलचस्प बात यह है कि मूसा का यह गीत अंततः सब्त के दिन होने वाली मंदिर सेवाओं का एक मानक हिस्सा बन गया। वास्तव में, मूसा का गीत हर सब्त सेवा का समापन भजन था। मूसा के गीत को 3 पदों में विभाजित किया गया था (निर्गमन 15.2–5, 6–10, और 11–18), और इनमें से एक पद को हर सब्त को बारी-बारी से गाया जाता था। इब्रानियों के लिए, निर्गमन केवल एक दूर की ऐतिहासिक जिज्ञासा नहीं है। यह इस्राएली राष्ट्र की स्थापना और व्यवस्था का समन्वय था। और, इस गीत के गायन ने इस्राएल को याद दिलाया कि वे हमेशा शत्रुतापूर्ण राष्ट्रों के बीच रहेंगे, फिर भी यहोवा उनकी रक्षा करने के लिए भी मौजूद रहेगा। जिस तरह उसने उन्हें मिश्र से छुड़ाया, उसी तरह वह उन्हें उनके भविष्य के दुश्मनों के हाथों से भी छुड़ाएगा। इब्रानियों को, और आज भी, उसी अंतिम जीत की तलाश है जिसकी चर्च को है। हमारे समय में, यह मुख्य रूप से एक मुद्दा है कि क्या मसीहा जो परमेश्वर के अनुयायियों को बचाने के लिए आता है, वह पहले भी यहाँ आ चुका है, या पहली बार आ रहा है, जो हमें अलग करता है।

अध्याय 15:22–27 पढ़ें

अब हम उद्धार कथा से आगे बढ़कर जंगल में इस्राएल के समय से संबंधित भाग की ओर बढ़ते हैं। तो आइए हम इन 6 पदों की जाँच करने से पहले थोड़ा समय लें जिन्हें हमने अभी पढ़ा है, ताकि निर्गमन की पुस्तक के जंगल में” भाग के लिए मंच तैयार किया जा सके।

सबसे पहले आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि कई विवरण जो हम चाहते थे कि निर्गमन में शामिल हों, लेकिन नहीं हैं, वास्तव में वे गिनती की पुस्तक में दिए गए हैं। गिनती निर्गमन से बहुत जुड़ी हुई है। जबकि मैं अपने निर्गमन अध्ययन में गिनतीओं से कुछ चीजें जोड़ सकता हूँ, हम अब से कुछ महीनों बाद गिनतीओं का गहराई से अध्ययन करेंगे।

दूसरा, निर्गमन की पुस्तक में हम जो देख रहे हैं, वह वास्तव में एक प्रक्रिया है। और जंगल वाले भाग में, हम इस्राएल के एक गुलाम शिशु से एक स्वतंत्र और उद्धार प्राप्त समस्याग्रस्त बच्चे बनने की यात्रा के बारे में सीखते हैं।

तीसरा, निर्गमन के जंगल खंड के दौरान तीन प्रमुख विषय विकसित किए गए हैं: शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों से निपटने में चुनौतियाँ, इस्राएल के लिए सरकार के प्रारंभिक स्वरूप का विकास, और लोगों द्वारा परमेश्वर और मूसा के खिलाफ बार-बार की जाने वाली “बड़बड़ाहट”।

हम इस्राएल के जंगल में बिताए समय में जो कुछ भी देखते हैं, और उम्मीद है कि उससे सीखते हैं, वह यह है कि सच्चा, सार्थक और स्थायी परिवर्तन आम तौर पर केवल व्यक्तिगत जंगल के अनुभव के दौरान ही मनुष्य में होता है। यह समय जब हम जो कुछ भी सामान्य, परिचित या आरामदायक अस्तित्व के आय में वर्णित करते हैं, वह हमारे लिए समाप्त हो जाता है। जब जीवन दिन-प्रतिदिन, यदि घंटे-दर-घंटे नहीं, तो लगभग निलंबित एनीमेशन की स्थिति में सिमट जाता है। जंगल का अनुभव बीच-बीच में होने जैसा होता है। यह न तो यह है कि आप कहाँ से आए हैं, न ही आप कहाँ जा रहे हैं। हममें से जो लोग लंबे समय तक जीवित रहे हैं, उन्होंने इसका अनुभव किया है। यह वह समय है जिसका उपयोग परमेश्वर हमें एक या दो पायदान परिपक्व करने के लिए करता है, क्योंकि हम सबसे कोमल और सबसे अधिक सीखने योग्य बन जाते हैं।

तो, चलिए शुरू करते हैं।

लाल सागर के पार चमत्कारिक रूप से बच निकलने और अपने पूर्व बंदी मिस्त्रियों की हार पर जश्न मनाने के तुरंत बाद, इस्राएल के लिए जीवन और मृत्यु की स्थिति पैदा हो जाती है। उनके पास पानी खत्म हो गया है। पद 1 में कहा गया है कि मूसा ने इस्राएलियों को जहाँ वे थे वहाँ से निकलने और आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया। अगर यह कहना अजीब लगता है कि मूसा ने इस्राएलियों को लाल सागर से दूर ले गया, तो आप सही कह रहे हैं: इब्रानी ऋषियों ने भी इसे अजीब माना। वे आम तौर पर इस बात पर सहमत हैं कि यहाँ जो हो रहा था वह यह था कि इब्रानी लोग जश्न मना रहे थे और मृत मिश्री सैनिकों से उनके कीमती सामान छीन रहे थे तथा उन्हें आगे बढ़ने की कोई जल्दी नहीं थी, इसलिए मूसा ने उन्हें तैयार होने से पहले ही जाने को कहा।

पद 22 में कहा गया है कि वे शूर के जंगल में चले गए। यहाँ मैं यह बताना चाहूँगा कि बाइबिल जिसे जंगल कहती है उसका मतलब रेगिस्तान है। शूर का मतलब “दीवार” माना जाता है। अब, इन स्थानों के कई नामों में से कुछ को हमारे लिए थोड़ा और वास्तविक बनाने के लिए, समझें कि अधिकांश समय, उस स्थान का कोई नाम नहीं था, या ऐसा कोई नाम नहीं था जिसके बारे में इस्राएलियों को पता था; इसलिए इस्राएलियों ने इसे एक नाम दिया। पिछले अध्याय में उनका पहला पड़ाव, सुक्कोत में एक अच्छा उदाहरण है, जब वे पहली बार वहाँ रुके थे, तो इसे सुक्कोत नहीं कहा जाता था। मूसा ने यह नहीं कहा, “अरे, सब लोग, हम सुक्कोत जा रहे हैं। नहीं, यह एक ऐसा नाम था जो उन्होंने उस स्थान को या तो अपने छोटे प्रवास के दौरान दिया था, या इसे छोड़ने के कुछ समय बाद। ऐसा ही, शायद, शूर और कनान के लिए उनके मार्ग पर अधिकांश अन्य नामों के साथ भी है।

इसके बाद, पद 23 में, यह कहा गया है कि वे मारा आए, लेकिन पानी नहीं पी सके क्योंकि वह बहुत कड़वा था। यहाँ हम फिर से नामकरण की समस्या का सामना करते हैं क्योंकि मारा इब्रानी में “कड़वा” के लिए है। वे निश्चित रूप से पीने का पानी प्राप्त करने के लिए जानबूझकर ऐसी जगह नहीं गए होंगे जहाँ पानी पीने के लिए बहुत कड़वा है। उन्हें उस समस्या का पता तब चला जब वे वहाँ पहुँचे। और, इसलिए, उन्होंने इसे एक उपयुक्त नाम दिया: मारा, कड़वा। कोई कल्पना कर सकता है कि यह सब कैसे हुआ मूसा ने लोगों से कहा, 3 दिनों के लिए पर्याप्त पानी ले लो, क्योंकि हम इस नखलिस्तान में रुकने जा रहे हैं जहाँ हमारे लिए पानी होगा।

3 दिन बीत जाते हैं, उनका पानी खत्म हो जाता है। और वे पहुँचते हैं, और, अंदाज़ा लगाइए, पानी पीने योग्य नहीं है। थके हुए गर्म और प्यासे, इस्राएलियों ने “बड़बड़ाहट” करके प्रतिक्रिया व्यक्त की जैसा कि पद 24 में कहा गया है। उन्होंने मूसा को दोषी ठहराया। मूसा ज़ाहिर है। परमेश्वर की ओर मुड़ता है और कहता है, ठीक है यह मछली का एक बढ़िया केतली है। तो अब क्या? और यहोवा मूसा से कहता है कि पानी में एक विशेष प्रकार की लकड़ी डालें जो उस सब कुछ को हटा देगी जो इसे कड़वा बनाता है। बेशक, यह काम कर गया, और अब लोग और जानवर अपनी प्यास बुझा सकते हैं।

अब यह उल्लेख करना उचित होगा कि जब इस्राएली रुके और डेरा डाला तो ये विभिन्न नखलिस्तान और कुएँ जहाँ भी स्थित थे, उन्हें भारी मात्रा में पानी की आपूर्ति करनी पड़ी, जिसका अर्थ है कि इस्राएल की ज़रूरतों के लिए उपयुक्त पानी के कुछ ही गड्ढे थे। क्योंकि यह गणना की गई है कि 3 मिलियन लोगों और उनके सभी झुंडों और पशुओं को जीवित रखने के लिए प्रति दिन 10 मिलियन गैलन से अधिक पानी की आवश्यकता होगी। 10 मिलियन गैलन कितने होते हैं? खैर, कोको वाटर टॉवर, जिस पर झंडा लगा हुआ है। 1.5 मिलियन गैलन है। इसलिए, इस्राएल की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हर दिन 7 की आवश्यकता होगी। मुझे लगता है कि हम बकरी की खाल की बाल्टी वाले एक विचित्र छोटे पानी के कुएँ और एक रेगिस्तानी युवती द्वारा एक बार में एक या दो गैलन पानी खींचने या इन तस्वीरों की तरह एक विशिष्ट रेगिस्तानी नखलिस्तान की किसी भी मानसिक तस्वीर को मिटा सकते हैं।

पद 25 में, हमें यह भी बताया गया है कि वहाँ क्या “वहाँ” विशेष रूप से मारा के नखलिस्तान को संदर्भित करता है, या केवल जंगल में उनके होने का एक सामान्य संदर्भ है, यह स्पष्ट नहीं है। वहाँ परमेश्वर कानून और निर्णय लागू करेंगे, या आपके संस्करण के आधार पर यह कानून और अध्यादेश, या कानून और नियम, या कुछ ऐसे बदलाव कह सकते हैं। अब, निश्चित रूप से यह मारा में नहीं था जहाँ तोरह दिया गया था। इसलिए यहाँ जिस चीज़ का उल्लेख किया जा रहा है वह कुछ और है; या शायद हम इसे तोरह की प्रस्तावना के रूप में देख सकते हैं। सामान्य रब्बीवादी विचार यह है कि यहाँ, इस्राएल को मुट्ठी भर सामान्य नियम दिए गए थे, लेकिन जो कुछ भी था वह सदियों से खो गया है।

आइए इनमें से कुछ कानूनी शब्दों को समझना शुरू करें क्योंकि इनके अर्थ महत्वपूर्ण होते हुए भी, हमारे अंग्रेजी अनुवादों में आमतौर पर दबे हुए या पूरी तरह से खो गए होते हैं। कानून और नियम या (बेहतर) कानून और **निर्णय** में अनुवादित शब्द इब्रानी **शब्द चोक** और **मिशपत** हैं। और, वे समानार्थी शब्द नहीं हैं। **चोक** का अर्थ है एक निर्धारित कार्य, या एक निर्धारित नियम उसी अर्थ में जिसे आज हम कानून कहते हैं। इसलिए, **चोक** एक सटीक कानूनी शब्द है जो कानून या विनियमन के रूप में हमारे विचार से सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। चोक आमतौर पर राजा या सरकार के उस आदेश से जुड़ा होता है जिसका पालन किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, **मिशपत** एक न्यायिक निर्णय है। यह एक न्यायाधीश द्वारा किसी मामले को देखने और निर्णय लेने के बारे में है। इसलिए, अगर किसी पर कानून तोड़ने का आरोप लगता है, तो मामला न्यायाधीश के सामने लाया

जाता है, और उस पर फैसला सुनाया जाता है। न्यायाधीश का निर्णय, निर्णय, **मिशपत** है। इसलिए, **मिशपत** अक्सर **चोक** के उल्लंघन का परिणाम होता है।

तो, हम यहाँ जो देखते हैं वह सरकार बनाने और कानूनों की एक व्यावहारिक प्रणाली स्थापित करने की प्रक्रिया की शुरुआत है। परमेश्वर इस्राएल को एक ऐसी सरकार देने जा रहा है जो उन कानूनों पर आधारित है जिन्हें वह स्थापित करने और न्याय करने जा रहा है। और, कानूनों की इस प्रणाली का उपयोग करते हुए यहोवा इस्राएल को परखने या सिद्ध करने जा रहा है। अब, पद 25 में "उनका परीक्षण" करने का वास्तव में क्या अर्थ है? हमारे लिए इसे समझना अच्छा होगा, क्योंकि बाइबिल में कई स्थानों पर, जिसमें नया नियम भी शामिल है, हमें बताया गया है कि विश्वासियों के रूप में, हम यहोवा द्वारा परखे जाएँगे। खैर, इब्रानी में, शब्द **नाचा** है। और, मुझे यकीन नहीं है कि हमारे पास इसका अनुवाद करने के लिए अंग्रेजी में कोई अच्छा शब्द है। लेकिन, यह एक और न्यायिक शब्द है। एक कानूनी शब्द, कानून की अदालत में कानूनी मामले की कोशिश करने के विचार से अलग नहीं है। यानी, नाचा, परीक्षण या सिद्ध करना, स्वयं कानून (चोक) नहीं है, न ही यह अंतिम फैसला (मिशपत) है, बल्कि, यह एक मामले की कोशिश करने की प्रक्रिया है। परीक्षण प्रक्रिया ही है, ताकि एक फैसला निर्धारित किया जा सके और न्याय किया जा सके। परमेश्वर जो कर रहा था वह उसकी सांसारिक सरकार के सिद्धांत को स्थापित करना था: इसमें ऐसे कानून शामिल थे जो स्पष्ट रूप से बताए जाते थे, अगर किसी व्यक्ति पर एक या उससे ज़्यादा कानून तोड़ने का आरोप लगता था तो क्या होता था, और अगर कोई दोषी पाया जाता था तो उसके क्या परिणाम होते थे। पूरी अवधारणा हमारी आधुनिक न्यायिक प्रणाली से बहुत मिलती-जुलती है।

अब, ताकि हम इस बारे में बेहतर समझ सकें कि इस्राएल कैसे काम करेगा, आइए एक पल के लिए उस विचार पर विचार करें अमेरिका में हमारे पास सरकार की एक समग्र प्रणाली है जो लगभग समान, हालांकि अलग-अलग, शक्तियों के साथ 3 शाखाओं में विभाजित है जो सिद्धांत रूप में एक दूसरे की देखरेख करते हैं। कार्यकारी, विधायिका और न्यायिक। विचार यह है कि विधायिका, कांग्रेस, कानून बनाती है, परिभाषित करती है और अधिनियमित करती है। यह न्यायिक शाखा, हमारी अदालत प्रणाली से पूरी तरह से अलग है, जो यह निर्धारित करती है कि किसी ने उन कानूनों को तोड़ा है या नहीं, और यदि ऐसा है, तो परिणाम क्या होने चाहिए, और इसके अलावा कुछ मामलों में यह निर्धारित करता है कि कांग्रेस द्वारा बनाया गया कानून हमारे संविधान (हमारे शासन सिद्धांतों) के अनुसार है या नहीं, और इसलिए, यह पहली जगह में एक न्यायसंगत कानून है। और, कार्यकारी शाखा के पास व्यापार के संबंध में कुछ नियम और विनियम बनाने की शक्तियाँ हैं, यह सेना को नियंत्रित करती है, और यह विदेशी सरकारों के साथ मामलों को संभालती है। अब, कृपया मेरी बात सुनें अमेरिकी सरकार प्रणाली के पीछे की अवधारणा, जिसके तहत सरकारी शक्तियाँ विभाजित हैं। और एक दूसरे से कुछ हद तक स्वतंत्र हैं, वह सरकार की प्रणाली की तरह बिल्कुल भी नहीं है जिसे परमेश्वर ने इस्राएल पर स्थापित किया है। इस्राएल की सरकारी प्रणाली, जिसे हम परमेश्वर द्वारा शासित सरकार कह सकते हैं, हमारी न्यायिक शाखा के संचालन से सबसे अधिक मिलती जुलती है।

इसके बाद, पद 25 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर इस्राएल पर जो सरकारी व्यवस्था थोप रहा है, वह व्यवस्था जो परमेश्वर मूसा को माउंट सिनाई पर देगा, एक वाचा के रूप में आएगी। लेकिन, यह वाचा मूसा और इब्रानियों द्वारा पहले से जानी गई वाचा से बिल्कुल अलग होगी जो अब्राहम को दी गई थी। क्योंकि वह वाचा बिना किसी शर्त के थी। यह प्रभु की ओर से एकतरफा प्रतिज्ञा था, परमेश्वर वह सब करेगा जो अपेक्षित था।

लेकिन, यहाँ यहोवा कहता है: “यदि तुम मेरी आज्ञाओं को सुनोगे और मेरे नियमों का पालन करोगे, तो वह अपने लोगों पर बीमारियाँ नहीं डालेगा। बल्कि, वह उनका उपचारक होगा”। यदि, यह छोटा सा शब्द बहुत बड़ा प्रभाव डालता है। बेशक, “यदि” शब्द न्यायिक प्रक्रिया के केंद्र में है, है न? पूरी न्यायिक प्रणाली “यदि” की एक पूरी श्रृंखला पर आधारित है।

क्योंकि यदि कानून तोड़ने का आरोप लगाने वाला कोई नहीं है, मामले का निर्णय करने वाला कोई नहीं है, उचित दंड निर्धारित करने वाला कोई नहीं है, तथा सजा को लागू करने वाला कोई नहीं है, तो कानून बनाने का कोई मतलब नहीं है।

निर्गमन के समय से लगभग 600 साल पहले की गई अब्राहमिक वाचा में “अगर” नहीं कहा गया था, क्योंकि वह वाचा कोई कानून नहीं थी, न ही कोई न्यायिक प्रणाली थी, न ही कोई सरकार का प्रकार था, जो इब्रानी लोगों पर थोपा गया था। यानी अब्राहम के साथ की गई वाचा सशर्त नहीं थी।

बल्कि यह एक तथ्य का कथन था, एक प्रतिज्ञा, कि परमेश्वर क्या करने जा रहा था। जैसा कि हम तोरह के अपने अध्ययन में बहुत बाद में देखेंगे, यहोवा ने अब्राहम के साथ जो वाचा बाँधी थी वह अनिवार्य रूप से एक प्रतिज्ञा, एक शपथ थी, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम से किए गए वादों के गारंटर के रूप में अपने स्वयं के नाम का आह्वान करते हुए बनाया था। दूसरी ओर, माउंट सिनाई पर मूसा के लिए जो वाचा आने वाली थी वह नियमों का एक सेट था जो बताता था कि इस्राएल को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। और, अगर कोई उन नियमों, कानूनों का उल्लंघन करता है, तो उसके साथ क्या होगा। आइए हम परमेश्वर की इन वाचाओं के बारे में एक और बहुत महत्वपूर्ण बात को भी समझें: प्रत्येक नई वाचा किसी पुरानी वाचा का प्रतिस्थापन नहीं थी। मैं इसे दूसरे तरीके से कहता हूँ यहोवा की ओर से कई अलग-अलग वाचाएँ थीं, प्रत्येक एक अलग उद्देश्य के लिए बनाई गई थी। अब्राहम के साथ वाचा को तब शून्य और अमान्य घोषित नहीं किया गया था, जब परमेश्वर ने मूसा के साथ वाचा बाँधी थी (जो माउंट सिनाई पर की गई थी। और, मूसा के साथ वाचा, जिसे अक्सर कानून के रूप में संदर्भित किया जाता है, को यीशु की वाचा के कारण शून्य और निरर्थक घोषित नहीं किया गया था, जिसे हम नई वाचा कहते हैं। वे प्रत्येक अलग-अलग उद्देश्यों के लिए थे, और प्रत्येक आज भी प्रभावी और बरकरार है। अब, निश्चित रूप से, जैसा कि प्रत्येक वाचा स्थापित की गई थी, इसका प्रभाव इस बात पर पड़ा कि पहले की वाचा कैसे प्रकट होगी। लेकिन, अगर हम यह समझ सकें कि बाइबिल में पढ़ी गई परमेश्वर की हर वाचा अभी भी वैध है, उनमें से किसी को भी प्रतिस्थापित या समाप्त नहीं किया गया है, तो हम परमेश्वर के वचन को बेहतर ढंग से समझ पाएँगे।

अब, आप में से कुछ लोग शायद मेरी कही गई बातों से थोड़ा घबरा रहे होंगे, क्योंकि आधुनिक ईसाई धर्म में यह लगातार निहित है, अगर सीधे तौर पर नहीं सिखाया जाता है, कि जब यीशु आया तो उसने सभी पिछली वाचाओं को खत्म कर दिया, जिनमें से कानून एक है। ओह, सच में?

अपनी बाइबिल में मत्ती 5:17 खोलिए।

यहाँ हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने इस विषय पर स्वयं क्या कहा, और ध्यान दें कि यह पहाड़ी उपदेश के संदर्भ में था। यहाँ हमारे उद्धारकर्ता के स्वयं के शब्द हैं जिन्हें हम व्यवस्था या पुराने नियम कहते हैं: **तोरह (या जिसे अक्सर व्यवस्था कहा जाता है) या भविष्यद्वक्ताओं (यह पुराने नियम का एक और खंड है जिसमें वे अधिकांश पुस्तकें शामिल हैं जिन्हें हम प्रमुख भविष्यद्वक्ताओं के रूप में सोचते हैं) को समाप्त करें। ऐसा मत सोचो कि मैं यहाँ आया हूँ। मैं मिटाने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।**” आपकी कुछ बाइबिलों में पूरा करने के बजाय “पूरा करो” लिखा हो सकता है।

तो, इसका क्या मतलब है? खैर, सबसे पहले, इसका मतलब वही है जो यह कहता है। परमेश्वर की कोई भी वाचा कभी भी रद्द या बदली नहीं गई है। तो क्या इसका मतलब यह है कि हमें व्यवस्था की 613 आज्ञाओं का पालन करना चाहिए? एक कठिन सवाल जिससे हम में से कई लोग जूझ रहे हैं। उन 613 आज्ञाओं में से लगभग 5 आज्ञाएँ बलिदान प्रणाली के बारे में हैं। खैर, चूँकि यीशु वह बलिदान था जो “एक बार के लिए” था, इसलिए उसकी पूजा करके, हम उसके बलिदान पर निर्भर होकर उन आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं। लेकिन, बाकी के बारे में क्या, शेष 3/4? खैर, आधुनिक ईसाई अभी भी उन 613 में से पहले 10 को मानते हैं, जिन्हें हम 10 आज्ञाएँ कहते हैं। फिर भी, किसी कारण से हमने खुद को उन 10 आज्ञाओं में से एक, सब्त को खत्म करने और इसे “प्रभु का दिन” कहे जाने वाले दिन से बदलने की अनुमति दी है। कुछ लोग कहते हैं, नहीं, हमने सब्त को खत्म नहीं किया, हमने बस इसे मनाने का दिन बदल दिया। किसी भी स्थिति में, यह विवाद का एक और स्रोत है। लेकिन, मेरे लिए किसी भी विवाद को खोजना मुश्किल है, वह है मत्ती 5:17 में मसीह ने जो कहा: बहुत ही सरल भाषा में है, है न? यीशु कहते हैं कि नई वाचा, जो स्वयं यीशु है।

जिस वाचा को हम सभी ईसाई मानते हैं और जिस पर अपने उद्धार के लिए निर्भर हैं, उसने मूसा की पुरानी वाचा को न तो समाप्त किया और न ही उसे प्रतिस्थापित किया, और न ही अब्राहम की उससे भी पुरानी वाचा को।

उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम तोरह के माध्यम से आगे बढ़ेंगे, हम बेहतर तरीके से समझ पाएँगे कि यह सब हम पर कैसे प्रभाव डालता है। मेरा इरादा है, जैसे-जैसे हम कुछ हफ्तों में निर्गमन के उस हिस्से में पहुँचेंगे जहाँ तोरह, कानून, माउंट सिनाई पर दिया गया है, यह स्पष्ट करना है कि ऐसा क्यों है कि मसीह के आगमन पर कानून को समाप्त नहीं किया गया था, और माउंट सिनाई पर वाचा वास्तव में क्या हासिल करने के लिए थी। और जब हम ऐसा कर लेंगे तो मुझे लगता है कि यीशु के शब्द कि वह कानून को “पूरा करने के लिए आया था और इसे खत्म करने के लिए नहीं, स्पष्ट हो जाएँगे।

खैर, अध्याय 15 हमें यह बताकर समाप्त होता है कि इस्राएली मारा से आगे बढ़े, और एलीम चले गए एक और जगह जिसके स्थान के बारे में कोई निश्चित नहीं है। और, वहाँ उन्होंने कुछ समय के लिए डेरा डाला। इस्राएलियों का शहर में रहने वाले और उपनगरीय, मजदूर और कारीगर के रूप में पूर्व जीवन आधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया था। अब, वे बेडौइन की तरह रहते थे, वे रेगिस्तानी खानाबदोशों की तरह रहते थे

आइये अध्याय 16 पर चलते हैं।

अध्याय 16 अध्याय 16:1—4 पढ़ें

तो, अब हम आसानी से देख सकते हैं कि परमेश्वर इस्राएल के समय का उपयोग रेगिस्तान में उनका परीक्षण करने या उन्हें साबित करने के लिए करने जा रहा है और वह "परीक्षण", इब्रानी में शब्द नाचा है, एक न्यायाधीश के समक्ष परीक्षण के न्यायिक अर्थ में है। इसका मतलब है, यहोवा ने सरकार के अपने नियम और कानून बनाने शुरू कर दिए हैं, जो जल्द ही माउंट पर तोरह के दिए जाने में परिणत होंगे।

और, इन कानूनों को इस्राएल की सरकार के आधार के रूप में देखते हुए, यदि आप चाहें तो, परमेश्वर एक निरंतर न्यायिक परीक्षण करने जा रहा है, यह देखने के लिए कि क्या इस्राएल उसकी "सुनवाई" करेगा, मतलब, सुनना और आज्ञा मानना। साथ ही, परमेश्वर इस्राएल को सिखा रहा है कि कैसे एक छुड़ाए हुए लोगों की तरह जीना है।

इस्राएली एलीम में लगभग एक महीने तक रहे (याद रखें कि एलीम का मतलब है "देवता"), परमेश्वर ने उन्हें मारा और फिर एलीम की परिस्थितियों से वह सब सिखाया जो वह उन्हें सिखाना चाहते थे, लेकिन अब समय आ गया था कि वे सीन के जंगल में आगे बढ़ें। ध्यान दें कि मैंने उस रेगिस्तान का नाम सिन (पाप) के रूप में नहीं बोला, बल्कि सीन (देखा) के रूप में बोला। यह मत सोचिए कि रेगिस्तान के उस क्षेत्र का नाम किसी तरह से उस चीज़ से संबंधित है जिसे हम चर्च में "पाप" शब्द बोलते समय सोचते हैं। इब्रानी में, इस शब्द का मतलब बस "काँटा" होता है। और, यह "सिनाई" शब्द का मूल शब्द है। माउंट सिनाई की तरह। इब्रानी में, "सिनाई" का उच्चारण सी-नाह-ई होता है, और इसका मतलब "कटिदार" होता है।

जब वे सीन के जंगल में पहुँचे, तो यह मिस्र से उनकी यात्रा में लगभग 2 महीने का समय था। और, जाहिर है, एक बार फिर से बड़बड़ाहट और शिकायत शुरू हो गई। और, उन्होंने किसके खिलाफ और किसके सामने बड़बड़ाया? मूसा और हारून, उनके नेता। और, यह उस शिकायत की पुनरावृत्ति है जो हमने पहले सुनी है: मिस्र में हमारे लिए हालात बेहतर थे, तो आप हमें यहाँ क्यों लाए हैं, सिर्फ भूखे मरने के लिए? परन्तु वास्तव में उनका बड़बड़ाना परमेश्वर के विरुद्ध था, क्योंकि मूसा और हारून तो केवल परमेश्वर के वचन का अनुसरण कर रहे थे और, यह एक ऐसा संबंध है जिसे लोग अभी भी पूरी तरह से समझ नहीं पाए थे और, बेशक, चूँकि उनकी शिकायत यहोवा के खिलाफ है, इसलिए यहोवा ही जवाब देता है; और उसकी प्रतिक्रिया के लहजे पर ध्यान दें। यह लोगों के प्रति क्रोध या घृणा नहीं है, क्योंकि परमेश्वर जानबूझकर इस्राएल को एक कठिनाई, एक चुनौती से दूसरी चुनौती की ओर ले जाने जा रहा है, ताकि उन्हें सिखाए और उन्हें परखें।

पद 4 में हमें बाइबिल के इतिहास के उन महान क्षणों में से एक मिलता है, जिसके बारे में हम अपने बचपन के दिनों में संडे स्कूल में पढ़ते हैं: स्वर्ग से मन्ना की वर्षा। लेकिन, अगर हम ध्यान से देखें, तो हम इस घटना में परमेश्वर द्वारा दिए गए भोजन के प्रावधान से कहीं ज़्यादा कुछ देखते हैं।

यहाँ कुछ नियम और कुछ महत्वपूर्ण निर्देश दिए जा रहे हैं। और, इसमें, परमेश्वर उन्हें परीक्षण में डालने जा रहा है।

हम अगले सप्ताह मन्ना की कहानी जारी रखेंगे।